Research Journal of Language, Literature and Humanities E-ISSN 2348-6252
Vol. **3(2),** 1-4, February **(2016)** *Res. J. Lang. Lit. Humanities*

इमाइल दुर्खीम का समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य एक अध्ययन

आरती पाण्डे
अरिहंत कॉलेज, इन्दौर
indoreartipandey86@gmail.com

Available online at: www.isca.in, www.isca.me
Received 30th December 2015, revised 10th January 2016, accepted 15th February 2016

सारांश

इमाइल दुर्खीम अपने समय की विचारधारा, घटनाओं और परिस्थितियों दर्पण थे। उनमें झाँक कर देखो और समाज की छवि उजागर हो जायेगी। दुर्खीम ने अपने मनोवांछित सिद्धांतों को व्यवहार में लाकर अपने समय की घटनाओं को व्यवस्थित रूप से रखने का प्रयास किया। समाजशास्त्र को वैज्ञानिक रूप देने का महत्वपूर्ण कार्य इमाइल दुर्खीम द्वारा किया गया है। इमाइल दुर्खीम सबसे पहला व्यक्ति है जो समाजशास्त्र विषय का प्रोफेसर हुआ था। उन्होंने समाज और सामूहिक जीवन को अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान अपने दर्शन में प्रदान किया है। समाजशास्त्रीय जागरूकता के परिप्रेक्ष्य में दुर्खीम निर्विवाद रूप में एक सशक्त हस्ताक्षर के रूप में उभरकर सामने आये। उन्होंने समाजशास्त्र को एक नवीन विज्ञान के रूप में स्थापित करने के साथ-साथ अनेक समाजशास्त्रीय समस्याओं को भी सुलझाने का प्रयास किया। प्रस्तुत लघु आलेख में दुर्खीम के समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

शब्दकुंजीः इमाइल दुर्खीम का समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य समाज दृष्टिकोण।

प्रस्तावना

राष्ट्र निर्माण और सामाजिक उन्नयन के संदर्भ में शिक्षा को वैचारिक मानकों और मूल्यों का साधन माना जाता है। शिक्षा से चरित्र निर्माण और व्यक्तित्व विकास करने के साथ-साथ भौतिक कल्याण की आशा की जाती है। शिक्षा का स्वरूप सार्वभौमिक, सामाजिक परिवेश में निहित दर्शन पर आधारित होता है। देशकाल से परे किसी विशेष विचारधारा के प्रसार के लिए भी शिक्षा का उपयोग किया जाता है। शिक्षा समाज और व्यक्ति का वह सामूहिक प्रयास है, जिसके द्वारा समाज में निहित रीति रिवाज, मूल्य आदर्शों का सफलतापूर्वक निर्वहन किया जाता है। भारतीय शिक्षा व्यवस्था कई प्रकार के मतों, विचारधाराओं और दर्शनों से प्रभावित हुई है। इनमें पाश्चात्य विद्वानों से लेकर भारतीय विद्वानों तक कई महानुभावों का योगदान यहां के विशाल सामाजिक परिवेश में मिलता रहा है। भारतीय विचारकों, चिंतनकर्ताओं और शिक्षाशास्त्रियों की इसी श्रृंखला में महान चिंतक और दार्शनिक इमाइल दुर्खीम का नाम आदर से लिया जाता है।

"समाज की छलनी बराबर काम करती रहती है। जो इस छलनी की कसौटी पर खरा उतरता है, समाज विद्वानों में वही विचारक का दर्जा पाता है।"

समाजशास्त्रीय सिद्धांत का आधार समाजशास्त्र के विचारक है। दुर्खीम दार्शनिक तो थे ही एक अनुभाविक वैज्ञानिक भी थे। दुर्खीम का जन्म फ्रांस के एपिनाल नाम स्थान में हुआ था। फ्रांस के इतिहास में दुर्खीम ऐसे पहले समाजशास्त्री थे जिन्होंने अपने सम्पूर्ण जीवन में फ्रांस की राजनैतिक और बौद्धिक गतिविधियों के साथ अपने आपको जोड़ा था। दुर्खीम ही थे जिन्होंने समाजशास्त्र को एक नये समाज विज्ञान के रूप में वैधता प्रदान की। दुर्खीम में जो समाजवादी विचारधारा थी, उसका जन्म भी इसी पहाड़ी इलाके के राजनैतिक सरगर्मी का परिणाम था। समाजशास्त्र की एक पृथक विधा की तरह स्थापित करने में दुर्खीम का योगदान महत्वपूर्ण है।[1]

शिक्षा दीक्षा: इमाइल दुर्खीम की प्रारम्भिक शिक्षा पेरिस में ही प्रारंभ हुई और 1822 तक चली, दुर्खीमकालीन समाज में समाजशास्त्र न तो सेकेण्डरी स्कूल के स्तर पर और ना

विश्वविद्यालय स्तर पर किसी विषय की तरह पढ़ाया जाता था। यह दुर्खीम कुछ नहीं कर सकते थे। इस कारण उन्होंने अपनी जीविका दर्शनशास्त्र के एक अध्यापक की तरह प्रारम्भ की। 1822 से 1857 तक वे पेरिस में प्रांतीय कॉलेजों में दर्शनशास्त्र पढ़ाते रहें। दुर्खीम ने जगह-जगह पर जर्मनी के बौद्धिक जीवन पर फुटकर लेख प्रकाशित किये। जर्मनी से संबंधित लेख के अतिरिक्त दुर्खीम ने तत्कालीन समाज की समस्याओं पर भी विविध, निबंधों में बहुत कुछ किया। इन सबके परिणाम स्वरूप उन्हें 1887 में फ्रांस के बोडियम्स विश्वविद्यालय में नियुक्ति मिल गयी। यहाँ से उन्होंने समाजविज्ञान का पाठ्यक्रम तैयार किया। यहीं पर नौ वर्ष बाद इन्हें समाजविज्ञान के अध्यक्ष पद से सम्मानित किया गया, जो इस विषय का फ्रांस में पहला प्रोफेसर था।[1,2]

दुर्खीम का कृतित्व: दुर्खीम ने अपनी सम्पूर्ण कृतियों को फ्रेंच भाषा में ही लिपिबद्ध किया। दुर्खीम द्वारा लिखित पुस्तक की एक सूची इस प्रकार है- डिवीजन ऑफ लेबर इन सोसायटी ;1893 में दुर्खीम की यह पहली कृति है। इस पर उन्हें डॉक्ट्रेट की उपाधि मिली है, द रूल्स ऑफ सोशियोलॉजीकल मेथड्स ;1895 में स्यूसाइड ;1897 में एलिमेन्ट्री ऑफ रिलिजियस लाइफ ;1912 में इन रचनाओं के अलावा दुर्खीम ने तीन सिद्धांत दिए जो इस प्रकार है- सामाजिक तथ्य का सिद्धांत, आत्महत्या का सिद्धांत, धर्म के कार्य।

सामाजिक तथ्य का सिद्धांत: दुर्खीम के अनुसार समाजशास्त्रीय विधि का पहला नियम यह है कि हमें सामाजिक जीवन में तथ्यों की वस्तुओं की तरह लेना चाहिए। वे कहते हैं सामाजिक तथ्य कार्य करने, सोचने एवं अनुभव करने के ऐसे तरीके हैं, जिनमें व्यक्तिगत चेतना से बाहर भी अस्तित्व बनाये रखने की उल्लेखनीय विशेषता होती है। दुर्खीम कहते हैं कि सामाजिक तथ्य में बाह्यता होती है। जब सामाजिक तथ्य व्यक्तिनिष्ठ नहीं होते, वस्तुनिष्ठ नहीं होते और हर तरह से व्यक्तित्व के लिए बाहरी होते हैं तो इसका व्यक्ति के व्यवहार पर पर्याप्त दबाव भी पड़ता है। सामाजिक तथ्य विश्वासों, अभिवृतियों और समूह के व्यवहारों का सामाजिक पहलू है। यदि समाज का अध्ययन करना है तो सामाजिक तथ्यों का अध्ययन करना ही होगा। इन्होंने सामाजिक तथ्य को काम करने, सोचने और अनुभव करने की पद्धति माना है। सामाजिक तथ्य का प्रभाव व्यक्ति पर इतना अधिक होता है उसकी सम्पूर्ण अनुभूति भी सामाजिक तथ्यों के परिवेश में आ जाती है। इसे पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित किया जाता है।[1]

आत्महत्या का सिद्धांत: फ्रांसीसी सामाजिक विचार इमाइल दुर्खीम ने विचलन एवं आत्महत्या के सिद्धांत का प्रतिपादन अपनी सर्वोत्तम कृति आत्महत्या में किया है। आत्महत्या दुर्खीम का एक वृहद मोनोग्राफ है। यह रचना दुर्खीम ने सामूहिक चेतना के समान्तर प्रस्तुत की है। आत्महत्या नामक पुस्तक में दुर्खीम ने जहां एक और आधुनिक समाजों में विद्यमान व्याधिकीय पहलुओं की बात की है, वहीं दूसरी ओर वे व्यक्ति और समूह के संबंधों को भी उजागर करते हैं। दुर्खीम पहले व्यक्ति थे जिन्होंने समाजशास्त्र के मोनाग्राफ में सांख्यिकीय पद्धति को अपनाया। आत्महत्या रचना को उन्होंने तीन खण्डों में बांटा है। पहले खण्ड में वे आत्महत्या के अतिरिक्त सामाजिक कारकों का उल्लेख करते हैं। दूसरे खण्ड में वे इन सामाजिक कारकों की पहचान करते हैं।, जो आत्महत्या के लिये उत्तरदायी है। दुर्खीम की रचना का तीसरा खण्ड अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसमें वे सामाजिक घटना के रूप में आत्महत्या के सामान्य प्रकृति का विश्लेषण करते हैं। वे आत्महत्या की सामाजिक प्रघटना को मुख्य रूप से तीन कारणों के साथ जोड़ते हैं। धर्म, सामाजिक पर्यावरण, राजनीति इन बातों का असर आत्महत्या करने वाले व्यक्तियों पर पड़ता है।[1,2,3]

धार्मिक सिद्धांत: दुर्खीम की सम्पूर्ण रचनाओं में धार्मिक जीवन के प्रारंभिक स्वरूप की रचना सर्वोत्तम समझी जाती है। इस रचना में दुर्खीम ने आदिम समाजों के अध्ययन के आधार पर एक सिद्धांत को विकसित किया है। जब उन्होंने अपना लेखन कार्य प्रारंभ किया तब भौतिक समाजों की सुदृढ़ता में धर्म की भूमिका को अपने विश्लेषण का आधार बनाया था। दुर्खीम ने धर्म के सम्पूर्ण जाल को इस रचना में उड़ेल दिया है, वे धर्म और समाज के साथ विज्ञान को भी जोड़ते हैं। दुर्खीम के युग में विज्ञान का बहुत बड़ा बौद्धिक और नैतिक प्रभाव औद्योगिक समाजों पर था। उनका तर्क है कि धर्म किसी व्यक्ति विशेष उपज नहीं है, यह तो एक प्रकार का सामूहिक निर्माण है। समाज के जो भी विचार संवेग और विश्वास होते हैं, उनका रूपांतरण धर्म में हो जाता है। धार्मिक जीवन के प्रारंभिक स्वरूपों को दुर्खीम ने विशेष अर्थ में लिया है। वे इसे प्रारंभिक

इसलिये कहते हैं कि इसकी व्यापकता को उन्होंने समाजों यानि सरल समूहों में देखी है।

औचित्य: सामाजिक विकास की प्रक्रिया के साथ-साथ सामाजिक विचारकों के चिन्तन का भी मानव जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। आधुनिक सामाजिकीकरण के विकास में समाज के वैज्ञानिकों आदि चिन्तकों का विषेश योगदान रहा है। समाजशास्त्रीय जागरूकता के परिप्रेक्ष्य में दुर्खीम निर्विवाद रूप से एक सशक्त हस्ताक्षर के रूप में स्वीकार किए जाते है। इमाइल दुर्खीम ने सार्वभौमिक रूप से सामाजिक जागरूकता की चर्चा की उनकी कृतियों से शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में एक समाजशास्त्रीय संकल्पना उभरकर सामने आयी और उस संकल्पना को शिक्षा के समाजशास्त्र के रूप मे स्वीकृती मिली। सैद्धांतिक तौर पर भारत में समाजशास्त्रीय शिक्षा पद्धति यूरोप के बाद मैं स्वीकार की गई। आधुनिक युग में इस विकास की प्रक्रिया को गति मिली और भारत में भी नवीन समाज शास्त्रीय परिस्थितियाँ विकसित होने लगी। वैश्विक परिदृश्य के साथ-साथ भारतीय सामाजिक वातावरण पर इमाइल दुर्खीम के शैक्षिक सामाजिक सिद्धांतो का विशेष प्रभाव रहा हैं। इमाइल दुर्खीम के विचारों ने समाज शास्त्रीय सिद्धांत के संदर्भ में स्पष्टता लाने का प्रयास किया। ऐसे में दुर्खीम के समाजशास्त्रीय सिद्धांतों एवं विश्लेषण का एक समीक्षात्मक अध्ययन करना प्रतीत होता है। पूर्व शोध निष्कर्षताओं के आधार पर यह ज्ञात होता है। अतः विद्यार्थी ने समग्र रूप से इस विषय का चयन करके यह कार्य करने का प्रयास किया हैं।

समस्या कथन:इमाइल दुर्खीम का समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्यः एक समीक्षात्मक अध्ययन।

उद्देश्य: प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्न उद्देष्य है। इमाइल दुर्खीम के जीवन दर्शन का अध्ययन करना, इमाइल दुर्खीम के सामाजिक परिप्रेक्ष्य का अध्ययन करना, वर्तमान सन्दर्भ में इमाइल दुर्खीम के विचारों की प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि: ऐतिहासिक विधि।

परिसीमन: इमाइल दुर्खीम से संबंधित साहित्य उनकी रचनाओं, सिद्धांतों का अध्ययन किया गया।

न्यादर्श: शोधकार्य मे दुर्खीम द्वारा लिखित सम्पूर्ण साहित्य, रचनाएँ, सिद्धांत को लिया गया है। न्यादर्श के रूप में शोधकर्ता द्वारा दुर्खीम के उपलब्ध साहित्य एवं व्याख्याता को न्यादर्श रूप में चयनित किया गया है।

उपकरण: प्रस्तुत शोधकार्य को पूर्ण करने के लिए शोधार्थी द्वारा निम्नलिखित साधनों का प्रयोग किया गया। दुर्खीम द्वारा रचित रचनाओं, सिद्धांतों और व्याख्याताओं से साक्षात्कार शोधार्थी द्वारा किया गया।

प्रदत्त संकलन एवं शोधविधि: प्रस्तुत अध्ययन की प्रकृति शिक्षा के दार्शनिक एवं सैद्धांतिक पक्ष के साथ साथ व्यावहारिक पक्ष से संबंधित है। अतः यह अनुसंधान पुस्तकालय अध्ययन संस्था और विद्व़ानों के साक्षात्कार एवं विचारमंथन पर आधारित है। सर्वप्रथम संबंधित व्याख्याताओं से सम्पर्क किया गया और सादर अनुमति प्राप्त कर प्रदत्तों के संकलन के लिए कार्य किया। प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य इमाइल दुर्खीम के शैक्षिक चिन्तन में निहित विभिन्न शैक्षिक तत्वों का अध्ययन तथा विश्लेषण करना है। अतः अध्ययन की प्रकृति के अनुसार प्रस्तुत अध्ययन हेतु विषयवस्तु विश्लेषण का उपयोग करते हुए साक्षात्कार को आधार बनाया गया।

इमाइल दुर्खीम का समाज शास्त्रीय विश्लेषण: ‘‘दुर्खीम समाज शास्त्र के अत्याधिक प्रभावशाली उद्यमकर्ता थे। वे एक सफल अध्यापक, चोटी के सम्पादक, सशक्त और सृजनात्मक समूह के नेता तथा शोधकर्ता थे।" (पारसंन्स के अनुसार)

दुर्खीम एक व्यक्ति और समाज के संबंध केन्द्र बिंदु थे। उन्होनें इस बात पर जोर दिया कि व्यक्ति समाज के प्रभुत्व को स्वीकार कर ले तो कभी भी समाज का विद्यटन नहीं हो सकता। दुर्खीम ने समाज की मूलभूत समस्याओं के विश्लेषण से अपना मुँह नहीं मोड़ा। उनके लेखन में जो कुछ लिखा वो उनके व्यक्तिगत अनुभव के परिणाम है। दुर्खीम के समाजशास्त्रीय सिद्धांत के रूझान में एक और बात कहनी चाहिये उनकी यह कतई रूचि नहीं थी कि वे समाज शास्त्र को एक विज्ञान की तरह विकसित करे पल्लवित करें। उनका उद्देश्य तो समाज शास्त्र की विधि को, उसके अध्ययन के नियमों को अधिक से अधिक धारदार, बनाना था। वे चाहते थे कि समाजशास्त्र की

अध्ययन विधियाँ इतनी तार्किक और असरदार हो कि अन्य सामजिक विज्ञान भी इन्हे अपनाये हम देखते है। कि समाजशास्त्र आदाम कुर्सी का समाज शास्त्र नहीं है। इसकी उपयोगिता व्यवहारिक जीवन में है। वे अपने युग के एक अग्रणी आनुभविक वैज्ञानिक थे। कभी भी दुर्खीम ने अपनी व्याख्या शून्य में प्रस्तुत नहीं की। उन्होंने कभी भी किसी तरह की मनमोजी अटकलबाजी नहीं की। अपने समय के आनुभाविक समस्याओं को निदान उन्होने कसी कसाई वैज्ञानिक विधि द्वारा किया। दुर्खीम ने अपने पेरिस के जीवनकाल में भरसक प्रयास किया कि समाजशास्त्र को एक स्वतंत्र समाज विज्ञान की तरह पेरिस के स्कूलों के पाठ्यक्रम में स्थान मिल सकें।

निष्कर्ष

निष्कर्ष एवं चर्चा: दुर्खीम समाज शास्त्र के अत्याधिक प्रभाव शाली उद्यमकर्ता थे। वे एक सफल अध्यापक सशक्त और सृजनात्मक समूह के नेता तथा शोधकर्ता थे। वे एक व्यक्ति और समाज के समक्ष केन्द्र बिंदु थे । उन्होने इस बात पर जोर दिया कि व्यक्ति समाज के प्रभुत्व को स्वीकार कर ले तो कभी भी समाज का विघटन नहीं हो सकता। दुर्खीम ने आत्महत्या के संदर्भ में कहा कि यह कोई व्यक्तिगत घटना नहीं हैं। यह तो समाज द्वारा की गई व्यक्ति की मौत है, हत्यारा समाज है, व्यक्ति नहीं। दुर्खीम का यह आत्महत्या का सिद्धांत सामूहिक दबाव का सिद्धांत है। दुर्खीम ने समाज को धर्म का सार कहा है। उनका कहना है जैसा समाज होगा वेसे ही उसके देवी-देवता भी होंगे। दुर्खीम ने जो सुझाव और प्रस्ताव रखे वास्तव में चमत्कारी थे। उनका कहना था धर्म समाज की मान्यताओं का रूपांतरण मात्र है। यदि समाज वैज्ञानिक और विवेकशील है तो धर्म भी वैज्ञानिक और विवेकशील बन जायेगा।

शैक्षिक निहितार्थ:

विद्यार्थियों के लिए: दुर्खीम की विचारधारा के सामाजिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन के बाद विद्यार्थियों के विचार, मानसिक स्तर पर प्रभाव पड़ेगा। आधुनिक समाज के परिदृश्य पर उनके सिद्धांतो का पूरा प्रभाव परिलक्षित होता हैं उन्होंने जो बात आत्महत्या के संदर्भ मे कही थी वहीं बात आज हमें दिखाई देती हैं। हमारे समाज की छवि विकृत होती जा रही हैं। समाज में आपराधिक प्रवृत्तियाँ बढ़ रही है। वर्तमान परिस्थिति में उनके सिद्धांतो का विश्लेषण विश्लेषण करके उसे कसौटी पर कस सकते है।

शोद्यार्थी के लिए: दुर्खीम द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों की प्रासंगिकता को समझकर उनकी प्रासंगिकता को ध्यान में रखते हुए इस विषय को आधार बनाकर आगामी शोध भी शोद्यार्थी कर सकता है।

शिक्षक प्रशिक्षार्णियों के लिए: दुर्खीम के विचारों की प्रासंगिकता को ध्यान में रखते हुए नएनए क्षेत्रों में शोध करा सकेंगे अन्य सामाजिक विचारकों, चिन्तकों के सामाजिक या समाज शास्त्रीय सिद्धांतों का भी विषयवस्तु विश्लेषण और वर्तमान प्रासंगिकता के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन कर सकेंगे। दुर्खीम और अन्य सामाजिक वैज्ञानिकों के सिद्धांतों का शैक्षिक निहितार्थ बता सकेंगे।

प्रशासन के लिए: पाठ्यचर्या और विषयवस्तु को ध्यान में रखकर सुविधाएँ मुहैया करा सकेंगे। शोद्यार्थी, विद्यार्थी, शिक्षकों को तदानुसार शैक्षिक वातावरण प्रदान कर दुर्खीम और अन्य समाज शास्त्रीय सिद्धांतों को आगे के कार्य के लिए बढ़ावा दे सकेंगे।

संदर्भ सुची:

1. दोषी, एस.एल. व जैन पी.सी. (2001) -प्रमुख समाजशास्त्रीय विचारक, दिल्ली।
2. गुप्ता एवं शर्मा (2007) - समाजशास्त्र, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा।
3. बघेल, डॉ.डी.एस. (2006) - समाजशास्त्रीय विचारों का आधार, म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल।